Visit Dwarkadheeshvastu.com For
FREE Vastu Consultancy, Music, Epics, Devotional Videos
Educational Books, Educational Videos, Wallpapers
****
All Music is also available in CD format. CD Cover can also be print with your Firm Name
****
We also provide this whole Music and Data in PENDRIVE and EXTERNAL HARD DISK.
Contact : Ankit Mishra (+91-8010381364, dwarkadheeshvastu@gmail.com)

****

*****

KATHA RAM BHAKT HANUMAN KI

****
****

कथा राम-भक्त हनुमान की

राम-भक्त हनुमान की, हम कथा सुनाते हैं।
कैसे क्या-क्या काम किए, हम ये बताते हैं।
हम कथा सुनाते हैं॥

केसरी नन्दन, पवन-सुत, कोई कहे हनुमान,
बाला जी, महावीर तुम्हीं हो, कष्ट-भंजन भगवान।
शिव के रुद्रावतार हो तुम, राम के भरत से भाई।
पिता केसरी पालन हारा, थी अन्जना माई॥
कैसे बीता बचपन, अब ये बतलाते हैं, हम कथा...

गैंद समझकर खेल-खेल में, सूरज मुख में दबाया।
हाहाकार मचा सब जग में, घोर अन्धेरा छाया।

भागे इन्द्र छोड़ सिंहासन, देवता भी घबराऐ।
हाथ जोड़ कर विनती की, और सूर्य देव छुड़ाए॥
राम के दरशन करने जब, शिव जी अयोध्या आए।
डाले गले में रस्सी हनुमन्त, खुद मदारी भेष बनाए॥
डमरू बजा-बजा कर शिव ने, तुम को बहुत नचाया।
राम के दरशन पाकर हनुमन्त, खूब खेल दिखलाया॥
देख के करतब हनुमान के, राम हर्षाते हैं, हम कथा...॥
देख बहादुरी हनुमान की, सुग्रीव ने मन्त्री बनाया।
रक्षक बन के हनुमान ने, बाली से उसे बचाया॥
सीता हरण हुआ तो, राम किष्किन्धा आए।
हनुमान ने राम-लखन, सुग्रीव से भेंट कराए॥
सुग्रीव ने राम-लखन को, आसन पर बिठलाया।
हाल जानकर सीता का, बाली का हाल सुनाया॥

पहले मार के बाली को हमें, खोया राज दिलाओ।
फिर हम सब दास तुम्हारे, जो चाहें करवाओ॥
मार के बाली राम ने, फिर सुग्रीव को राजा बनाया।
बाली-पुत्र अंगद भी, राम-शरण में आया॥
आगे क्या-क्या होता है, हम ये बतलाते हैं, हम कथा...॥
सुग्रीव ने वानर सेना को फिर, कहा की जल्दी जाओ।
कहाँ है माता सीता जाकर, जल्द ही पता लगाओ॥
घूम-घूम कर आए वानर, पर ना मिली माता।
राम प्रभु को दुखी देख, हनुमान से रहा ना जाता॥
फिर जटायू ने दी खबर, कि लंका नगरी जाओ।
रावण हरी है सीता, तुम जाकर उसे छुड़ाओ॥
दूर समुंद्र पार थी लंका, वहाँ कैसे जाते हैं।
सोच सभी मन ही मन, बहुत घबराते हैं॥

कैसे दूर हुई ये मुश्किल, ये बतलाते हैं, हम कथा... ॥
हार गये जब सब वानर, तब हनुमान जी आए।
कैसे-कैसे काम किए, फिर उनको याद दिलाए॥
हनुमान ने राम प्रभू के, चरण में शीश झुकाया।
लेकर माता की निशानी, आशीर्वाद भी पाया॥
मुख में दबा के राम निशानी, उड़ चले हनुमान।
हाथ जोड़ कर सब बानर, करें उन्हें प्रणाम॥
राम-लखन भी उन्हें देख, खूब हर्षाते हैं, हम कथा...॥
उड़ते-उड़ते शाम हुई, तो देखी लंका नगरी।
सोने की वो बनी हुई थी, यही थी रावण-नगरी॥
नीचे उतर कर हनुमान ने, बहुत से राक्षस मारे।
लगे ढूँढ़ने माता को, फिर भूखे-प्यासे बेचारे॥
ढूँढ़ते-ढूँढ़ते देर हुई, पर मिली ना सीता माई।

तभी कहीं से राम-धुन, कानों में पड़ी सुनाई ॥
हैरान हुए राक्षस-नगरी में, कौन है राम का प्यारा।
लगे ढूँढ़ने राम-भक्त को, यहीं है अब तो सहारा ॥
मिले विभीषण कुटिया में, पूछा तुम कौन हो भाई।
उसी रावण का भाई हूँ, जिसने है सीता चुराई ॥
हनुमन्त बोले राम-दूत, हनुमान है मेरा नाम।
पता लगाना सीता का बस, यही है अब तो काम ॥
बोले विभीषण हनुमान जी, बैठो पहले कुछ खाओ।
दर्शन करके ही खाऊँगा, माता का पता बताओ ॥
माता से मिलना है तो, महलों में जाना होगा।
अशोक-वाटिका बाग है, जहाँ पहरा बहुत ही होगा ॥
सुनकर हनुमन्त खड़े हुए, और बोला जय श्री राम।
माता का पता लगाना है, चाहे जो हो अन्जाम ॥

क्या हाल था सीता माता का, ये बतलाते हैं, हम कथा... ॥
छुप-छुप कर वो जा पहुँचे, जहाँ थी सीता माई।
तभी वहाँ पर रावण के, आने की आवाज थी आई॥
रावण ने आकर सीता को, बहुत देर समझाया।
रानी बन कर राज करो, मैं यही था कहने आया॥
रो-रो कर सीता ने फिर, रावण को दुत्कारा।
पापी, दुष्ट और नीच कहा तो, रावण ने किया किनारा॥
पेड़ पर चढ़कर हनुमान जी, मौका देख रहे थे।
एक-एक कर के सभी राक्षस, नींद में उंग रहे थे॥
मौका देख हनुमान ने, राम-मुद्रिका निकाली।
नीचे फैकी जैसे ही, सीता ने वो उठाली॥
देख निशानी राम की, आँखों में आँसू आए।
इधर-उधर देखा पर, कोई नजर ना आए॥

सीता बोली सामने आओ, कौन हो तुम बतलाओ।
कहाँ है मेरे राम प्रभू, जल्दी ही पता बताओ॥
हनुमान ने पहले तो, सूक्ष्म सा रूप बनाया।
नीचे आकर माता के, चरणों में शीश झुकाया॥
हाथ जोड़ कर राम-लखन का, पूरा हाल बताया।
मैं राम-दूत हनुमान हूँ, रावण से मिलने आया॥
जल्दी ही अब राम प्रभू, सेना लेकर आएंगे।
मार के सब दुष्टों को, तुम्हें छुड़ा ले जाएंगे॥
बोले हनुमन्त माता से, अब पहले मैं कुछ खाऊँगा।
बाग में जो फल लगे हैं, वह चख कर ही जाऊँगा॥
अब आगे क्या-क्या होता है, ये बतलाते हैं, हम कथा...॥
फिर हनुमान ने पहले सा, विराट रूप बनाया।
पेड़ उखाड़े जड़ से ही, बाग उजाड़ बनाया॥

मार-मार के राक्षस सारे, वहाँ से दिए भगाए।
दौड़े-दौड़े रावण को, सब हाल बताने आए॥
रावण ने भेजा अक्षय को, बानर पकड़ के लाओ।
मार-मार के उसको फिर, खूब मजा चखाओ॥
हनुमान ने अक्षय को, वहीं पर मार गिराया।
तब इन्द्रजीत मेघनाथ, हनुमान से लड़ने आया॥
ब्रह्मास्त्र से हनुमान को, रस्सी से बन्धवाया।
बड़ी खुशी-खुशी लेकर, रावण दरबार में आया॥
दरबार में क्या-क्या होता है, ये बतलाते हैं, हम कथा...॥
रावण बोला कौन हो तुम, क्यों उत्पात मचाया।
मौत का तुझको डर नहीं, जो लंका में घुस आया॥
राम-दूत हनुमान हूँ, मैं राम संदेशा लाया।
छोड़ सिया को शरण में आजा, यही कहने मैं आया॥

दूत हूँ मैं तुम राजा रावण, कुछ तो ध्यान करो।
बैठने को आसन दो, फिर मेरा सम्मान करो॥
सुनकर रावण हंसकर बोला, अब तो मौत मिलेगी।
तूने जो उत्पात किया, अब उसकी सजा मिलेगी॥
सुनकर हनुमान ने अपनी, पूंछ का आसन बनाया।
चढ़ कर जो बैठे तो, ऊँचा सिंहासन पाया॥
यह देखकर रावण को, बहुत ही गुस्सा आया।
एक बानर आज मुझे यहाँ, पाठ पढ़ाने आया॥
मेघनाथ से बोला रावण, इसको मार गिराओ।
पर बोले विभीषण दूत है ये, दूत की प्रथा निभाओ॥
पूछ बड़ी ही प्यारी होती, बानर को बतलाया।
आग लगा दो पूंछ में समझो, उसको सबक सिखाया॥
मान के बात मेघनाथ की, पूंछ में आग लगाई।

उड़े हनुमान लंका में, सोने की लंका जलाई॥
जगह-जगह पर आग लगी थी, जल गई सारी लंका।
सीता से हनुमान मिले फिर, बजा के अपना डंका॥
हाथ जोड़ कर हनुमान ने, कोई निशानी मांगी।
चूड़ी लेकर माता की, जाने की इजाजत मांगी॥
आगे क्या-क्या होता है, ये बतलाते हैं, हम कथा...॥
परेशान थे राम-लखन, और साथ में बानर सेना।
हनुमान जी कहाँ गए, बीता जा रहा महीना॥
उसी समय पर दिया सुनाई, फिर से जय श्री राम।
पलभर में ही सामने थे, महावीर हनुमान॥
पहले तो हनुमान ने, चरणों में शीश झुकाया।
माता की चूड़ी देकर फिर, पूरा हाल बताया॥
चूड़ी देखके राम की, आँखों में आँसू आए।

तुम हो बड़े महावीर जो, सीता की खबर लाए ॥
राम ने हनुमान को फिर, अपने गले लगाया।
वह बोले मैं दास तुम्हारा, मैंने तो फर्ज निभाया ॥
चारों ओर मची हुई थी, हनुमान की जय-जय कार।
पता लगाया सीता का, जो बैठी समुंद्र पार ॥
कैसे पार किया सागर को, ये बतलाते हैं, हम कथा... ॥
राम-लखन सुग्रीव सभी, मिल बैठे करें विचार।
अब युद्ध होगा रावण से, सेना करो तैयार।
सुग्रीव ने सब बानर और भालू, वहाँ पर लिए बुलाए ॥
नल-नील अंगद, जामवन्त, और बहुत से वीर भी आए।
जल्दी ही हो गइ वहाँ, एक बड़ी सेना तैयार ॥
अब लगे सोचने जाऐं कैसे, विशाल समुंद्र पार।
सोच-सोच के थक गए सब, मिला ना कोई उपाय ॥

परेशान देख सब को वहाँ, फिर हनुमान जी आए।
ना घबराओ राम के भक्तों, हम सब लंका जाएंगे।
राम नाम की महिमा से, समुंद्र पर पुल बनाएंगे॥
इतना कहकर हनुमानजी, एक पत्थर उठा लाए।
राम-नाम लिखकर उस पर, पानी में दिया तराए॥
बस फिर क्या था भागे सब, पत्थर का ढेर लगाने।
राम-नाम लिखकर लगे, समुंद्र पर पुल बनाने॥
कुछ ही दिन में राम-कृपा से, पुल हो गया तैयार।
राम-लखन सेना सहित, जा पहुँचे समुंद्र पार॥
राम-कृपा से अब आगे का, हाल सुनाते हैं, हम कथा...॥
अब तो सामने लंका थी, जिसमें थी सीता माई।
बोले लखन राम से भैया, जल्दी करो चढ़ाई॥
राम-प्रभू सब को बहुत, धीरज बंधवाते हैं।

राम-दूत बनकर अंगद, लंका में जाते हैं॥
अंगद ने रावण को जाकर, राम-संदेश सुनाया।
सुनते ही रावण को फिर, बहुत ही गुस्सा आया॥
रावण बोला कौन है तू, पहले मुझको बतलादे।
नहीं दूँगा मैं सीता को, फिर राम को यह जतादे॥
छै महीने तक जिस बाली ने, तुझे काख में दबाया।
उसी वीर का पुत्र हूँ अंगद, तुझे समझाने आया॥
तूने पाप किया है रावण, अब भी होश में आजा।
मरना नहीं चाहता है तो, राम-शरण में आजा॥
रावण बोला भाग नहीं तो, बाहर फिकवाता हूँ।
किस में दम है जो पैर हिला दे, लो मैं जमाता हूँ॥
एक-एक करके हार गए सब, अन्त में रावण आया।
अभी उठाकर फैंकता हूँ, कहकर हाथ बढ़ाया॥

जल्दी से अंगद ने अपना, वहाँ से पैर उठाया।
जा के पैर राम के पड़, मैं यही बताने आया॥
फिर लौट चले वापिस अंगद, अपनी धाक जमाकर।
सारा हाल कहा राम से, युद्ध भूमि में आकर॥
रावण की बुद्धि-भ्रष्ट है प्रभू, अब युद्ध करना होगा।
मार के रावण को अब तो, सीता को लाना होगा॥
कैसे अन्त हुआ रावण का, ये बतलाते हैं, हम कथा...॥
छोड़ के लंका रावण की, विभीषण शरण में आए।
बड़े आदर से राम ने उनको, सेना में लिया मिलाए॥
सब के कहने पर राम ने, युद्ध का बिगुल बजाया।
पहले दिन ही मेघनाथ, युद्ध में लड़ने आया॥
लक्ष्मण बोले, राम से भैया, पहले मैं युद्ध में जाऊँगा।
बहुत शीघ्र ही इन्द्रजीत को, मौत की नींद सुलाऊँगा॥

शाम हो गई मेघनाथ, लक्ष्मण की पकड़ ना आया।
लड़ते-लड़ते मेघनाथ ने फिर, नागपाश चलाया।
नाग से बांध के राम-लखन को, मूर्छित कर गिराया॥
राम-लखन के गिरते ही, पड़ गई विपदा भारी।
कौन काटे इस नागपाश को, सोचे सेना सारी॥
थोड़ी देर में हनुमान, गरुड़ को लेकर आए।
काट के बंधन नागपाश, दोनों ही मुक्त कराए॥
आखिर में मेघनाथ ने, शक्ति-बाण चलाया॥
शक्ति-बाण था ऐसा जिसका, नहीं था कोई उपाय।
लगते ही गिर पड़े लक्ष्मण, निर्बल और असहाय॥
हनुमान ने देखा तो, दौड़े वहाँ पर आए।
उठा के लक्ष्मण हाथों में, राम के पास ले आए॥
राम ने देखा लक्ष्मण को, वो करने लगे विलाप।

सैना भी डर गई सारी, दिल सब के गए कांप॥
तभी विभीषण बोले जाकर, सुशैन वैद्य को लाओ।
शक्ति-बाण लगा है जल्दी, इनकी जान बचाओ॥
भागे हनुमन्त वैद्यराज, सोते हुए उठा लाए।
वह देखकर बोले सुबह तक, जो संजीवनी लाए॥
सूरज उगने से पहले, अगर इनको दिया सुघांये।
तब ही प्राण बचेंगे इनके, और न कोई उपाय॥
सौ कौस दूर है पर्वत, जहाँ ये पैदा होती।
इसकी पहचान यही, कि इसमें रोशनी रहती॥
हाथ जोड़कर राम से बोले, महावीर हनुमान।
दो आशीर्वाद मुझे मैं, करूँगा प्रभू ये काम॥
जय श्री राम बोल कर, उड़ चले हनुमान।
सौ कोस जा कर फिर, करने लगे पहचान॥

उड़ते-उड़ते रात हुई, तब दूर दिखा वो पर्वत।
चमक रहा था वो तो सारा, कौन सा है वो दर्खत॥
जल्दी से हनुमान ने फिर, पूरा पर्वत ही उठाया।
क्योंकि जल्दी जाना है, दिन निकलने को आया॥
हनुमान जी पर्वत लेकर, उड़ते जाते हैं, हम कथा... ॥
युद्ध भूमि में पड़े थे लक्ष्मण, मूर्छित और असहाए।
राम करे विलाप कहीं, सूरज निकल ना जाए॥
देख रहे थे सभी ही ऊपर, कहाँ गए हनुमान।
देर हो रही आओ हनुमन्त, निकल ना जाए जान॥
तभी कुछ हवा चली और, हनुमान पड़े दिखाई।
उन्हें देख वहाँ सभी की, जान में जान थी आई॥
नीचे आकर बोले हनुमन्त, फिर से जय श्री राम।
तौड़ संजीवनी पर्वत से, वैद्यराज चलाओ काम॥

जैसे ही वैद्यराज ने, तौड़ संजीवनी सुंघाई।
वैसे ही तुरन्त उनमें, फिर से जान थी आई॥
खड़े होकर राम ने, हनुमान को गले लगाया।
जान बचा कर तुमने मुझ पर, बहुत कर्ज चढ़ाया॥
बानर भालू नाच-नाच कर, खुशी मनाते हैं, हम कथा...॥
सूरज निकला हुआ सवेरा, युद्ध का बजा नगारा।
मेघनाथ ने आकर फिर, लक्ष्मन को ललकारा॥
लक्ष्मन जी हनुमान सहित, युद्ध भूमि में आए।
कुद ही देर में मेघनाथ, मौत की नींद सुलाए॥
इसी तरह कुम्भकरण का भी, फिर हो गया सफाया।
अब बारी थी रावण की, वो ही लड़ने को आया॥
रावण राम-लखन को लेकर, पताल-लोक में आया।
हनुमान वहाँ भी पहुँच गए, उन्हें आजाद कराया॥

आगे क्या-क्या होता है, हम ये बतलाते हैं, हम कथा... ॥
अगले दिन जब रावण लड़ने, युद्ध भूमि में आया।
घनघोर युद्ध चला पर कोई, हल निकल ना पाया ॥
बोले विभीषण राम से फिर, पेट में बाण चलाओ।
अमृत-कुंड छुपा है इसमें, फोड़ो और मार गिराओ ॥
मान के बात विभीषण की, राम ने बाण चलाया।
अमृत-कुंड फोड़ दिया, रावण को मार गिराया ॥
रावण के मरते ही हो गई, राम की जय-जयकार।
अन्त हो गया राक्षशों का, और पाप का इस प्रकार ॥
राम-प्रभू के चरणों में, सब शीश झुकाते हैं, हम कथा... ॥
हनुमान जा के लंका से, सीता को लाते हैं।
इधर राम विभीषण को, लंकापति बनाते हैं ॥
सीता अग्नि-परीक्षा देकर, राम के पास आई।

नाचे गाए बानर-भालू, खूब खुशी मनाई॥
14 वर्ष भी पूरे हो गए, खत्म हुआ बनवास।
अब आऐंगे राम-प्रभू, भरत लगाए आस॥
राम बोले फिर हनुमान से, अयौध्या नगरी जाओ।
हमारे आने की खबर, सबको वहाँ बताओ॥
जय श्री राम बोलकर, उड़ चले हनुमान।
सबको खबर दी आ रहे, जल्दी ही प्रभू राम॥
राम के आने की सुनकर, सब ने खुशी मनाई।
खूब सजाया शहर को, और दिवाली मनाई॥
राम आए अयौध्या, आखिर वो पल भी आया।
माताओं के चरणों में, आते ही शीश झुकाया॥
सुना भरत ने जैसे ही, वो भागे-भागे आए।
चरण आँसूओं से, प्रभू-राम के धुलाए॥

राम-भरत मिलाप देखकर, रोऐं सब नर-नारी।
विभीषण सुग्रीव अंगद भी, मिले सब से बारी-बारी॥
अगले दिन था राम-तिलक, बन गए राजा राम।
हाथ जोड़कर नन्दी भी, करे उन्हें प्रणाम॥
हनुमान भी राम को देख, खुशी मनाते हैं।
नाच-नाच दरबार में ही, हरी-गुण गाते हैं॥
अजर-अमर होने का उनको, सीता से मिला वरदान।
ऐसे ही थे राम-भक्त, पवन-पुत्र हनुमान॥
हनुमान ने राम-सिया को, दिल में लिया बसाए।
भरी सभा में सीना चीरा, दर्शन दिया कराए।
आज भी जहाँ लिया जाता है, राम-सिया का नाम।
वहीं-वहीं पर जाते हैं, राम-भक्त हनुमान॥
ओंकारेश्वर ज्योतिलिंग जहाँ, बहती है नर्मदा माई।

नन्दी राम ने वहीं लिखी, ये कथा तुम्हें जो सुनाई॥
हाथ जौड़ कर नन्दी सब को, ये बतलाते हैं।
राम-भक्त के हनुमानजी, कष्ट मिटाते हैं॥
हम कथा सुनाते हैं॥

श्री हनुमान जी की आरती

आरती कीजै हनुमान लला की।
दुष्टदलन रघुनाथ कला की॥
जाके बल से गिरिवर कापैं।
रोग-दोष जाके निकट न झाँकै॥
अंजनि-पुत्र महा बलदाई।
संतन के प्रभू सदा सहाई॥
दे बीरा रघुनाथ पठाये।
लंका जारि सीया सुधि लाये॥
लंका सो कोट समुद्र सी खाई।
जात पवनसुत बार ना लाई॥
लंका जारि असुर संहारे।
सियारामजी के काज सँवारे॥
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे।
आनि संजीवन प्रान उबारे॥

पैठि पताल तोरि जम-कारे।
अहिरावण की भुजा उखारे॥
बायें भुजा असुर दल मारे।
दहिने भुजा संतजन तारे॥
सुर नर मुनि आरती उतारें।
जै जै जै हनुमान उचारें॥
कंचन थार कपूर लौ छाई।
आरति करत अंजना माई॥
जो हनुमानजी की आरति गावै।
बसि बैकुंठ परमपद पावै॥
लंक विध्वंस किये रघुराई।
तुलसीदास स्वामी आरती गाई॥
आरती कीजै हनुमान लला की।
दुष्टदलन रघुनाथ कला की॥

राम-भक्त हनुमान

इक दिन बोले राम प्रभु से, महावीर हनुमान।
हमनें सुना है प्रभू जी तुम तो, जा रहे अपने धाम,
हम भी साथ चलेंगे आपके, यहाँ क्या अपना काम,
जैसे जल बिन मछली वैसे, राम बिना हनुमान॥
राम-प्रभु ने हनुमान को, अपने पास बिठाया।
सर पर रख कर हाथ उन्हें, प्यार से समझाया,
तुम हो अजर-अमर है तुमको सीता का वरदान,
यहीं पर रहकर करने हैं, तुम्हें मेरे कुछ काम॥
जो भी राम का प्यारा हो, उसके कष्ट मिटाना,
राम-नाम की जोत जलाकर, खूब नाम कमाना॥
पहले तो हनुमान ने, ना में सिर हिलाया।
मान गये वो आखिर में जब, मुंह मांगा वर पाया,
जहाँ-जहाँ रामायण हो या, आए राम का नाम,
वहीं-वहीं पर जा पहुँचे, ये राम-भक्त हनुमान॥
आज भी जहाँ आता है, राम-सीया का नाम।
वहीं-वहीं पर जाते हैं, पवन-पुत्र हनुमान,
नन्दी हाथ जोड़ सभी को, ये बतलाते हैं,
राम-भक्त के हनुमान जी, कष्ट मिटाते हैं॥

भक्तों कष्ट मिटाते हैं॥

महावीर हनुमान

चुटकी में जो कष्ट मिटा दे, भूत-पिसाच को दूर भगा दे
बोलो क्या है उसका नाम, वो हैं महावीर-हनुमान-2
कोई कहे उन्हें संकच-मोचन, कष्ट भंजन भगवान
पिता केसरी, अन्जनी माता, बल में भीम समान
सूरज को जो मुख में दबा ले
हाथों में पर्वत को उठा ले
बोलो क्या है उसका नाम, वो हैं महावीर हनुमान-2
राम के हैं वो राज दुलारे, सीता की आँखों के तारे,
शंकर-सुमन भी कहते उनको, अक्षय जैसे वीर को मारे,
फांद समुंद्र पार जो जाए
सोने की लंका को जलाए
बोलो क्या है उसका नाम, वो हैं महावीर हनुमान-2
सीता जी की खबर जो लाए, पानी में पत्थर को तराए
शक्तिबाण लगा लक्ष्मण को बूटी लाकर प्राण बचाए
पल में सीना फाड़ दिखा दे
राम-सिया के दर्श करा दे

बोलो क्या है उसका नाम, वो हैं महावीर हनुमान-2
चुटकी में जो कष्ट मिटा दे,
भूत-पिसाच को दूर भागा दे
बोलो क्या है उसका नाम,
वो हैं महावीर हनुमान-2

श्री हनुमत स्तुति

(क्षमा प्रार्थना)

हाथ जोड़ विनती करूँ, धरूँ हृदय में ध्यान।
शरणागत की लाज रख, हे पवन-पुत्र हनुमान॥
मेंहदीपुर और सालासर, धारा पावन धाम।
अनुपम छवि हनुमान की, दर्शन से कल्याण॥
हनुमत-हनुमत मैं रटूँ, हनुमत जीवन आधार।
नित जो सुमिरन करे, होज्या भव से पार॥
चैत्र सुदी पूनम को, उत्सव भारी होय।
बाबा के दरबार से, खाली जाय न कोय॥

लाल लंगोटे वाले की, लाल ध्वजा फहराय।
सारे वेद पुराण भी, तुमरा ही यश गाय॥
मंगल ओर शनिवार को, जो घृत-सिन्दूर चढ़ाय।
संकट कटे मिटे सब पीरा, अन्त अमर पद पाय॥
ध्वजा नारियल मोदक मेवा, जो कोई भोग लगाय।
तेरी कृपा बनी रहे, मन चाहा वर पाय॥
संकट मोचन हनुमान का, धरें हमेशा ध्यान।
हम सब पावे सदा, तेरी कृपा से मान॥

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

बाबा तेरी दया से,
हर काम हो रहा है।
करते हो तुम भोलेनाथ,
मेरा नाम हो रहा है॥